मूल्यांकन के प्रकार Type of Evaluation

मूल्यांकन का तात्पर्य किसी घटना प्राप्तांक या परीक्षण परिणाम के परस्पर महत्व के निधारर्ण तथा तुलना से है । सामान्यत; किसी चीज के मुल्य या महत्व को निर्धारित करने की प्रकिया को मूल्यांकन कहते है । मूल्यांकन से गुणात्मक मापन का बोध होता है मूल्यांकन से हमे इस बात का पता चलता है कि किसी घटना प्राप्तांक या परिक्षण का गुण क्या है वह सफल है या असफल है । मूल्यांकन की प्रकिया मे छात्रों मे पूर्व प्रभावों तथा नवीन उत्पन प्रभावों के आधार पर जांच की जाती है ।
मूल्यांकन दो प्रकार के होते है । जो निम्नलिखित है ।

1. संरचनात्मक मूल्यांकन Formative Evaluation

2. योगात्मक मूल्यांकन Summative Evaluation

संरचनात्मक मूल्यांकन Formative Evaluation

:- संरचनात्मक से अभिप्राय किसी ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया अथवा साम्रागी आदि के मूल्यांकन से है जिसमे मूल्यांकन के आधार पर सुविधा करना संभव हो दुसरे शब्दों मे संरचनात्मक मूल्यांकन किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया की सामाग्री की प्रभावशाली गुणवतापूर्ण वांछनीय तथा उपयोगी बनाया जा सके । अत; स्पष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन मे किसी निर्माणाधी कार्यक्रम योजना प्रकिया या सामाग्री को अंतिम रूप देने से पूर्व उसके प्रारम्भिक प्रारूप का मूल्यांकन किया जाता है जिससे उसकी संरचनागत कमियों को दूर किया जा सके ।

अत; स्पष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन का मूख्य उद्धेश्य शैक्षिक कार्यक्रम एवं सामाग्री की कमियों को इंगित करना तथा उन्हे दूर करने के उपाय बताना है । अत; संरचनात्मक मूल्यांकन कर्ता के कार्यो को तीन भागों मे बांटा जा सकता है ।

1. शैक्षिक कार्यक्रम या सामाग्री के विभिन्न अंगो के गुण या दोंषो के संबंध मे स्पष्ट प्रमाण एकत्र करना ।
2. इन प्रमाणों के आधार पर कार्यक्रम या सामाग्री की कमियों को सम्मुख रखना है ।
2.
3. इन कमियों को दूर करके कार्यक्रम या सामाग्री को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है ।

योगात्मक मूल्यांकन Smmative Evaluation :-

योगात्मक मूल्यांकन से अभिप्राय है कि किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक योजना या सामाग्री की समग्र वांछनीय को ज्ञात करने की प्रकिया से है । दुसरे शब्दों मे योगात्मक मूल्यांकन कर्ता किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना या सामाग्री के गुण व दोंषो की जानकारी इसलिए एकत्रित करता है जिससे उस कार्यक्रम को स्वीकार करने या भविष्य मे जारी रखने के संबंध मे निर्णय लिया जा सके । मूल्यांकन विधि

की उपयोगीता संबन्धी जानकारी करने हेतु साक्षात्कार योजना, प्रश्नावली अथवा श्रेणी मापनी आदि उपयुक्त मानक उपकरण अथवा विधि का निर्माण करता है । इसके बाद विशेषज्ञों की सहमती एकत्रित करता है । उसके बाद संबंधी मानकों एवं साक्ष्यियो की गणना द्वारा उसकी उपयोगिता को परखता है । और अंत में यह निर्णय करता है कि यथा शिक्षा नीति, योजना अथवा कार्यक्रम, पाठयवस्तु शिक्षण विधि शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि को आगे चालू रखा जाए अथवा नहीं और यदि चालू रखा जाए तो किस रूप में । साफ जाहिर है कि योगात्मक मूल्यांकन का उद्धेश्य किसी पूर्व निश्चित एवं लागू शिक्षा नीति , योजना अथवा कार्यक्रम ,पाठयवस्तु शिक्षण विधि , शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि की उपयोगिता की परख करना और उसके आगे चालू रखने अथवा चालू न रखने का निर्णय लेना होता है !

मूल्यांकन के प्रकार Type of Evaluation

मूल्यांकन का तात्पर्य किसी घटना प्राप्तांक या परीक्षण परिणाम के परस्पर महत्व के निधारर्ण तथा तुलना से है । सामान्यत; किसी चीज के मुल्य या महत्व को निर्धारित करने की प्रकिया को मूल्यांकन कहते है । मूल्यांकन से गुणात्मक मापन का बोध होता है मूल्यांकन से हमे इस बात का पता चलता है कि किसी घटना प्राप्तांक या परिक्षण का गुण क्या है वह सफल है या असफल है । मूल्यांकन की प्रकिया मे छात्रों मे पूर्व प्रभावों तथा नवीन उत्पन प्रभावों के आधार पर जांच की जाती है ।

मूल्यांकन दो प्रकार के होते है । जो निम्नलिखित है ।

1. संरचनात्मक मूल्यांकन Formative Evaluation
2. योगात्मक मूल्यांकन Summative Evaluation

संरचनात्मक मूल्यांकन Formative Evaluation :-

संरचनात्मक से अभिप्राय किसी ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया अथवा साम्रागी आदि के मूल्यांकन से है जिसमे मूल्यांकन के आधार पर सुविधा करना संभव हो दुसरे शब्दों मे संरचनात्मक मूल्यांकन किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना प्रकिया की सामाग्री की प्रभावशाली गुणवतापूर्ण वांछनीय तथा उपयोगी बनाया जा सके । अत; सपष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन मे किसी निर्माणाधी कार्यक्रम योजना प्रकिया या सामाग्री को अंतिम रूप देने से पूर्व उसके प्रारम्भिक प्रारूप का मूल्यांकन किया जाता है जिससे उसकी संरचनागत कमियों को दूर किया जा सके ।

अत; सपष्ट है कि संरचनात्मक मूल्यांकन का मूख्य उद्धेश्य शैक्षिक कार्यक्रम एवं सामाग्री की कमियों को इंगित करना तथा उन्हे दूर करने के उपाय बताना है । अत; संरचनात्मक मूल्यांकन कर्ता के कार्यो को तीन भागों मे बांटा जा सकता है ।

1. शैक्षिक कार्यक्रम या सामाग्री के विभिन्न अंगो के गुण या दोंषो के संबंध मे सपष्ट प्रमाण एकत्र करना ।
2. इन प्रमाणों के आधार पर कार्यक्रम या सामाग्री की कमियों को सम्मुख रखना है ।
2.
3. इन कमियों को दूर करके कार्यक्रम या सामाग्री को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना है ।

योगात्मक मूल्यांकन Smmative Evaluation :-

योगात्मक मूल्यांकन से अभिप्राय है कि किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक योजना या सामाग्री की समग्र वांछनीय को ज्ञात करने की प्रकिया से है । दुसरे शब्दों मे योगात्मक मूल्यांकन कर्ता किसी शैक्षिक कार्यक्रम योजना या सामाग्री के गुण व दोंषो की जानकारी इसलिए एकत्रित करता है जिससे उस कार्यक्रम को स्वीकार करने या भविष्य मे जारी रखने के संबंध मे निर्णय लिया जा सके । मूल्यांकन विधि की उपयोगीता संबन्धी जानकारी करने हेतु साक्षात्कार योजना, प्रश्नावली अथवा श्रेणी मापनी आदि उपयुक्त मानक उपकरण अथवा विधि का निर्माण करता है । इसके बाद विशेषज्ञों की सहमती एकत्रित करता है । उसके बाद संबंधी मानकों एवं साक्ष्यियो की गणना द्वारा उसकी उपयोगिता को परखता है । और अंत में यह निर्णय करता है कि यथा शिक्षा नीति, योजना अथवा कार्यक्रम, पाठयवस्तु शिक्षण विधि शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि को आगे चालू रखा जाए अथवा नहीं और यदि चालू रखा जाए तो किस रूप में । साफ जाहिर है कि योगात्मक मूल्यांकन का उद्धेश्य किसी पूर्व निश्चित एवं लागू शिक्षा नीति , योजना अथवा कार्यक्रम ,पाठयवस्तु शिक्षण विधि , शिक्षण साधन अथवा मूल्यांकन विधि की उपयोगिता की परख करना और उसके आगे चालू रखने अथवा चालू न रखने का निर्णय लेना होता है !